DEPARTMENT OF NEPHROLOGY

WE THE DEPARTMENT OF NEPHROLOGY HAVE ORGANIZED THE CADEVARIC TRANSPLANT AWARENESS PROGRAM ON 29/11/2023 IN SHRI BALAJI INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCE UNDER THE GUIDANCE OF

DR.KULDEEPCHABRA (NODAL OFFICER),

DR. PUSHPENDRA NAIK (GASTRO AND SURGEON)

DR. SAINATH PATTEWAR (NEPHROLOGISTS, H.O.D.)

DR. RAVI DHAR (NEPHROLOGISTS),

DR. SURAJ JAJOO(UROLOGIST)

SENIOR CO-ORDINATOR KRISHNAKANT SAHU,

TRANSPLANT CO-ORDINATOR RAMA MISHRA.

Shri Balaji Institute of Medical Sciences, Mowa, Raipur (C.G.)

Shri Balaji Institute of Medical Sciences, Mowa, Raipur (C.G.)

Shri Balaji Institute of Medical Sciences, Mowa, Raipur (C.G.)

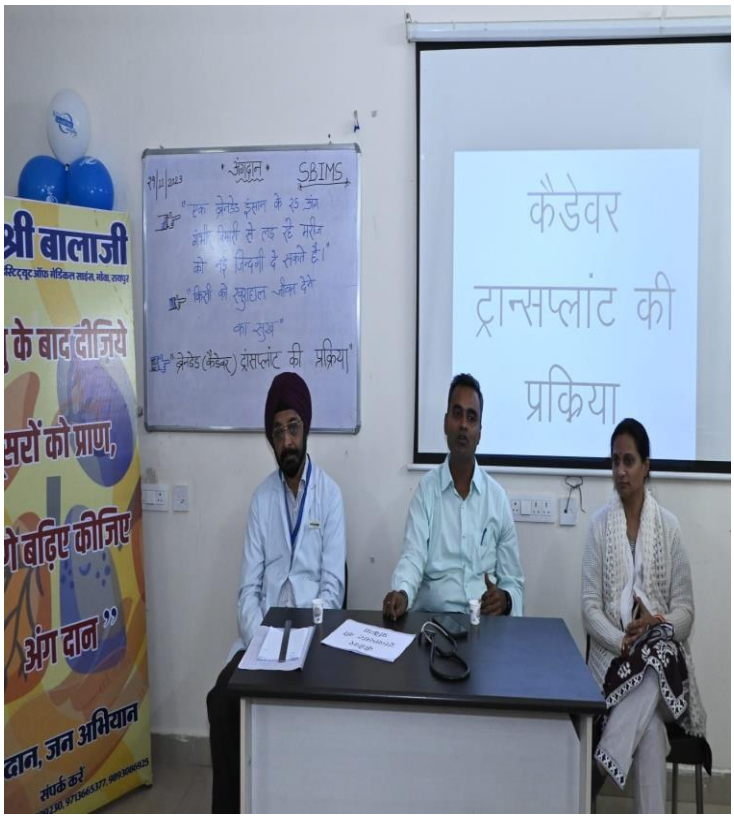

श्री बालाजी इं ट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंस
मौवा, रायपुर
अंगदान
महादान
अंगदान को बढ़ावा दीजिए, जरूरतमंद लोगों का जीवन बचाइए।

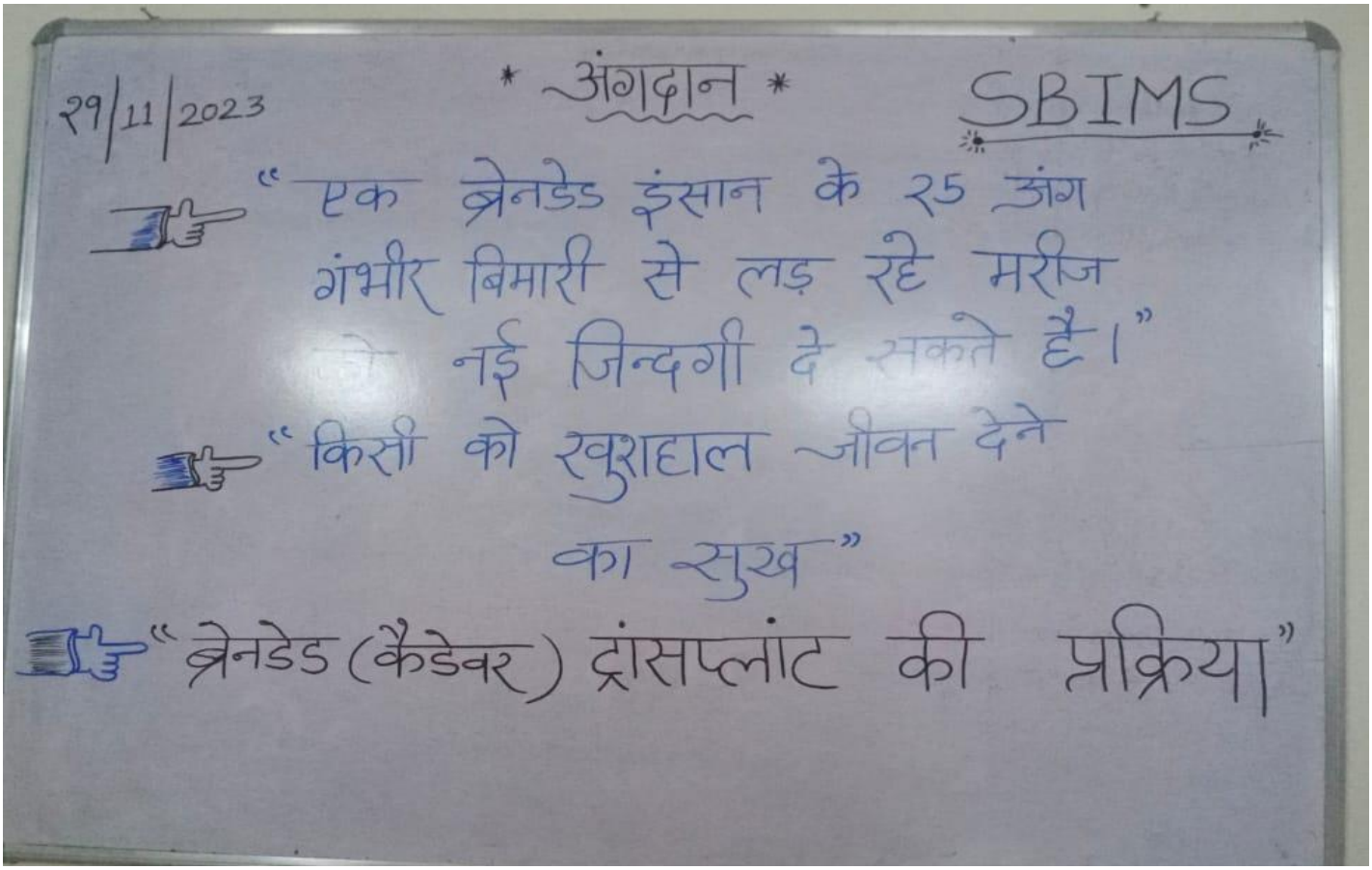
29/11/2023
* अंगदान *
SBIMS
"एक ब्रेनडेड इंसान के 25 अंग
गंभीर बिमारी से लड़ रहे मरीज
को नई जिन्दगी दे सकते है।"
"किसी को खुशहाल जीवन देने
का सुख"
"ब्रेनडेड (कैडेवर) ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया"

चिकित्सा | मोवा स्थित श्री बालाजी इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंस में सफल आपरेशन

ब्रेन डेड युवा की किडनी दूसरे को किया ट्रांसप्लांट

रायपुर (वि)। इन दिनों मेडिकल साइंस में आधुनिक तकनीक के माध्यम से बड़ी से बड़ी बीमारियों से निजात मिल रही है। ऐसा ही एक मामला आया है जिसमें एक ब्रेन डेड युवा की किडनी 36 वर्ष के दूसरे मरीज में ट्रांसप्लांट की गई। यह सफल ट्रांसप्लांट मोवा स्थित श्री बालाजी इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंस में हुआ।

हास्पिटल के डा. देवेंद्र नायक ने बताया कि उक्त मरीज डबल हाई रिस्क में था। यानी देने वाले और लेने वाले दोनों में काम्प्लीकेशंस थे, जिसे अस्पताल के डाक्टरों की टीम ने सूझ-बूझ से दूर किया और मरीज कैडेवर ट्रांसप्लांट के बाद अस्पताल से डिस्चार्ज हो गया है।

डा. नायक ने बताया कि 36 वर्षीय मरीज दिनेश बरमन पिछले करीब 4-5 वर्षों से डायलिसिस पर था। मरीज ने नवंबर 2022 में कैडेवर ट्रांसप्लांट के लिए रजिस्ट्रेशन कराया। इसके बाद एक कैडेवर डोनर मिला, जिसकी किडनी मरीज में ट्रांसप्लांट की गई। मरीज

मरीज के साथ बालाजी अस्पताल के डाक्टर, जिन्होंने सफलतापूर्वक ट्रांसप्लांट किया। ● संस्थान

पूरी तरह स्वस्थ है, लेकिन डाक्टरों ने उसे लंबे समय तक नियमित दवाई खाने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अपनी तरह का यह पहला सफल किडनी ट्रांसप्लांट है।

छह घंटे का लगता है समयः नेफ्रोलाजिस्ट डा. साईं नाथ पत्तेवार ने बताया कि कैडेवर किडनी ट्रांसप्लांट में किडनी निकालने के बाद ट्रांसप्लांट करने के बीच अधिकतम छह घंटे का वक्त होता है। जितनी जल्दी ट्रांसप्लांट होगा उतना ट्रांसप्लांट सक्सेस होने का चांस होता है। उक्त कैडेवर डोनर एक शासकीय अस्पताल में भर्ती था। उसकी किडनी वहीं से आपरेशन के बाद अस्पताल लाई गई थी, यहां अस्पताल के डाक्टरों की टीम ने सफल ट्रांसप्लांट किया।

ट्रांसप्लांट करने वाली टीमः ट्रांसप्लांट करने वाली टीम में डा. कुलदीप सिंह छाबड़ा (नोडल अफसर), डा. पुष्पेंद्र नायक, डा. साईंनाथ पत्तेवार, डा. रविधर, डा. उमा, ड. सूरज जाजूजू समेत अन्य शामिल थे।

हैल्थ प्लस

बालाजी हॉस्पिटल में हुआ पहला कैडेवर किडनी ट्रांसप्ल

रायपुर | मोवा स्थित श्री बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में पहला सफल कैडेवर किडनी ट्रांसप्लांट किया गया। जांजगीर के रहने वाले 36 साल के दिनेश बरमन को एक युवा ब्रेन डेड पेशेंट की किडनी ट्रांसप्लांट की गई। श्री बालाजी हॉस्पिटल के चेयरमैन डॉ. देवेंद्र नायक के मुताबिक पेशेंट करीब चार से पांच साल से डायलिसिस पर था। नवंबर, 2022 में कैडेवर ट्रांसप्लांट के लिए रजिस्ट्रेशन कराया गया। इसके बाद एक कैडेवर डोनर मिला, जिसकी किडनी पिछले माह पेशेंट को ट्रांसप्लांट की गई। उक्त पेशेंट हाई रिस्क में था। डोनर और रिसिपेंट दोनों में कॉम्प्लीकेशन थे, जिसे डॉक्टर्स की टीम ने सूझ-बूझ से दूर किया। पेशेंट कैडेवर ट्रांसप्लांट के बाद अस्पताल से स्वस्थ्य होकर डिस्चार्ज हो चुका है। नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. साईं नाथ पत्तेवार के अनुसार कैडेवर किडनी ट्रांसप्लांट में अधिकतम छह घंटे का समय मिलता है, जितनी जल्दी ट्रांसप्लांट होगा उतना ट्रांसप्लांट सक्सेस होने का चांस होता है। इस केस में भी कैडेवर डोनर एक शासकीय अस्पताल में था, उसकी किडनी वहीं से

ऑपरेशन के बाद यहां लाई गई। ट्रांसप्लांट के बाद रिजेक्शन हो गई और जिससे तीन बार डायलिसिस पड़ा। प्लाज्माफेरेसिस किया गया। एंटी रिजेक्शन दी गईं। इस ट्रांसप्लांट को डॉ. पुष्पेंद्र नायक, डॉ. केरकेट्टा, डॉ. सूरज जाजू, डॉ. कुलदीप सिंह छ डॉ. साईनाथ पत्तेवार, डॉ. रविधर, डॉ. मनीष डॉ. हिमानी दोशी, डॉ. प्रफुल्ल अग्निहोत्री, डॉ. बाजपाई, कृष्णकांत साहू, रमा मिश्रा की टीम ने बनाया। 2014 से श्री बालाजी हॉस्पिटल में अब त सफल किडनी ट्रांसप्लांट किए जा चुके हैं।

पायनियर

डॉक्टरों की सूझबूझ ने हाई रिस्क पेशेंट को दी नई जिंदगी, युवा ब्रेन डेड पेशेंट की किड़नी की गई ट्रांसप्लांट

श्री बालाजी हॉस्पिटल में हुआ पहला सफलतम कैडेवर किड़नी ट्रांसप्लांट

डॉक्टरों को करना पड़ा किड़नी रिजेक्शन का सामना, हॉस्पिटल के विशेषज्ञों ने हालात को किया काबू

पायनियर संवाददाता ≺ रायपुर
www.dailypioneer.com

राजधानी के मोवा स्थित सुप्रसिद्ध हॉस्पिटल श्री बालाजी इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस ने एक और कीर्तिमान रचते हुए 36 वर्षीय युवा के जीवन में खुशियां भर दी। हॉस्पिटल के सुपरस्पेशलिस्ट डॉक्टरों की टीम ने बेहद कड़ी मेहनत करते हुए युवा ब्रेन डेड मरीज की किड़नी ट्रांसप्लांट कर यह कीर्तिमान रचा है, जो राजधानी ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। ट्रांसप्लांट के वक्त डॉक्टरों को किड़नी रिजेक्शन का भी सामना करना पड़ा, लेकिन विशेषज्ञों की यह टीम हालात पर काबू करते हुए मरीज को स्वस्थ कर डिस्चार्ज किया है।

मान्यता के बाद हुआ पहला कैडेवर किड़नी ट्रांसप्लांट

बालाजी इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस ने स्वास्थ्य विभाग से मान्यता के बाद पहला सफल कैडेवर किडनी ट्रांसप्लांट किया है। श्री बालाजी हॉस्पिटल के चेयरमैन डॉक्टर देवेंद्र नायक ने बताया कि यह कार्य डॉक्टरों की टीम के लिए काफी

मुश्किल था, क्योंकि किड़नी दूसरे हास्पिटल से लाकर 6 घंटे के अंदर ही मरीज को ट्रांसप्लांट करनी थी। उन्होंने बताया कि 36 वर्षीय इस मरीज के लिए एक शासकीय अस्पताल के युवा ब्रेन डेड मरीज की किड़नी लाकर ट्रांसप्लांट की गई है। यह मरीज डबल हाई रिस्क में था। वहीं डोनर और रिसिपेंट दोनों में कॉम्प्लिकेशन थे। लेकिन अस्पताल के डॉक्टरों की टीम ने सूझबूझ से सावधानी पूर्वक यह सफलतम किड़नी ट्रांसप्लांट किया है।

मरीज ने नवंबर-2022 में कराया था पंजीयन

डॉक्टर देवेंद्र नायक ने बताया कि यह मरीज दिनेश बर्मन पिछले करीब चार-पांच वर्षों से डायलिसिस पर था। मरीज ने नवंबर-2022 में कैडेवर ट्रांसप्लांट के लिए नियमों के तहत रजिस्ट्रेशन कराया था। जिसके बाद कैडेवर डोनर मिलने पर मरीज के किड़नी ट्रांसप्लांट की प्रक्रिया शुरू हुई और सफल ट्रांसप्लांट कर लंबे वक्त तक रेगुलर दवाई खाने के लिए सलाह दी गई है, ताकि मरीज को कोई परेशानी न हो।

6 घंटे के अंदर करना होता है ट्रांसप्लांट

नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ साई नाथ पत्तेवार ने बताया कि कैडेवर किडनी ट्रांसप्लांट में किडनी निकालने के बाद ट्रांसप्लांट करने के बीच अधिकतम 6 घंटे का समय होता है। जितना जल्दी ट्रांसप्लांट होगा मरीज के लिए उतना ही सफल ट्रांसप्लांट का अवसर होता है। इस ट्रांसप्लांट में मरीज में रिजेक्शन हो गया था, जिसके बाद तीन बार डायलिसिस और प्लास्मफेरेसिस किया गया। साथ ही एंटी रिजेक्शन की दवाइयां भी देनी पड़ी है।

अब तक हुए 81 सफल किड़नी ट्रांसप्लांट

श्री बालाजी हॉस्पिटल में 2014 से अब तक 81 सफल किटड़ी ट्रांसप्लांट किए जा चुके हैं। श्री बालाजी हॉस्पिटल छत्तीसगढ़ का पहला लिवर ट्रांसप्लांट सेंटर है। यहां अब तक 9 सफल लिवर ट्रांसप्लांट किए गए हैं। वहीं इस किड़नी ट्रांसप्लांट में डॉक्टर पुष्पेंद्र नायक (गैस्ट्रो लिवर एवं किडनी ट्रांसप्लांट सर्जन), डॉक्टर अरुण (केरकेट्टा यूरो सर्जन), डॉ सूरज जाजू (यूरो सर्जन), डॉ कुलदीप सिंह छाबड़ा (नोडल अफसर), डॉक्टर साई नाथ पत्तेवार (नेफ्रोलॉजिस्ट), डॉक्टर रविधर (नेफ्रोलॉजिस्ट), डॉक्टर मनीष नाग (एनेस्थेटिक), डॉ हिमानी दोशी (एनेस्थेटिक), डॉ प्रफुल्ल अग्निहोत्री (क्रिटिकल केयर इंचार्ज), डॉ सोनल बाजपाई (किटिकल केयर इंटेनसिविस्ट), कृष्णकांत साहू (ट्रांसप्लांट कोआर्डिनेटर), रमा मिश्रा (ट्रांसप्लांट कोआर्डिनेटर) डॉ. बीरेन्द्र पटेल, डॉ. दीपक जैसवाल, सीईओ हिमांशु साहू, समेत नर्सिंग स्टाफ की टीम शामिल रही।

TheHitavada
Raipur City Line | 2023-12-08 | Page- 4
ehitavada.com

First Cadaver Kidney transplant done at Shri Balaji Institute of Medical Science

■ Staff Reporter
RAIPUR, Dec 7

SHRI Balaji Institute of Medical Science has created a new history with the first Cadaver Kidney transplant in the hospital. Situated at Mova in Raipur, Balaji Hospital has achieved this feat after the recognition from State Health Department.

Chairman of the hospital Dr Devendra Naik said that the patient of 36 years age was in the double risk category. As such, there was complication both in the donor and the recipient. However, the team of doctors first treated the complications and after the cadaver transplant was successfully performed, patient

Team of doctors with the patient with successful cadaver kidney transplant at Shri Balaji Hospital, Raipur.

was discharged.

Dinesh Barman was on dialysis for past 4/5 years and got registered for cadaver transplant donor in November 2022. After information of a matching cadaver donor who was a brain dead patient from government hospital was received by the hospital, Dr Naik added.

Sharing the cadaver kidney transplant process, Gastro, Liver and Kidney Transplant Surgeon Dr Pushpendra Naik said that the maximum of 6 hours time is technically termed as 'the best' for removing the kidney from the donor for transplantation. However, the success of transplantation depends in the early execution of transplantation in the patient. While referring a critical situation in the process, Dr Naik said that after transplantation, the kidney got rejected. Later, thrice dialysis was performed followed by Plasmapheresis and doses of anti-rejection were prescribed. With the successful handling of all criticalities, the patient was released, he stated.

Powered by iDocuments